P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-7* March- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महिला बीड़ी श्रमिकों की पारिवारिक जीवन स्तर : एक अध्ययन (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)

Family Life Level of Women Bidi Labours: A Study (With Special Reference to Rewa District)

Paper Submission: 02/03/2021, Date of Acceptance: 20/03/2021, Date of Publication: 24/03/2021

अनुज पाण्डेय
जनभागीदारी अतिथि विद्वान
वाणिज्य विभाग,
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा म.प्र. भारत

सारांश

समाज में अनेक पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले श्रमिक निवास करते है। उनका जीवन स्तर भिन्न – भिन्न होता है। महिला बीडी श्रमिकों की पारिवारिक आय केवल बीडी बनानें के बदले मिले पारिश्रमिक से पूरी होती है। महिला बीडी धर्म के आधार पर सर्वाधिक हिन्दू (88.61%) है, जाति के आधार पर सर्वाधिक अनुसूचित जाति (63.05%) की महिलाएं हैं एवं आयु के आधार पर सर्वाधिक महिला बीडी श्रमिक अनुसूचित जाति (63.05%) की हैं। महिला बीडी श्रमिक अनेक समस्याओं से जूझती रहती है। जिससे उनके स्वास्थ्य एवं आय पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। महिला बीडी श्रमिकों के लिये सरकार को सहयोग करना चाहिये जिससे कि उनकी पारिवारिक स्थिति में सुधार हो सके।

Workers with many family backgrounds reside in the society. Their standard of living varies. The female beedi workers' family income is met only by the remuneration received in lieu of making beedi. Female bidi is the most Hindu on the basis of religion, the most scheduled caste women are on the basis of caste and the most female bidi workers are Scheduled Castes on the basis of age. Female beedi workers are struggling with many problems which adversely affect their health and income. The government should co-operate with women bidi workers so that their family situation can be improved.

मुख्य शब्द : भौगोलिक, पारिवारिक जीवन स्तर, अपर्याप्त, परिलक्षित।
Geographical location , Family Standard, Inadequate, Reflected.

प्रस्तावना

समाज में अनेक पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले श्रमिक निवास करते हैं उनका जीवन स्तर अलग–अलग होता है। महिला बीड़ी श्रमिक भी विशेष पारिवारिक स्थित में रहती है तथा उनका भी जीवन स्तर, उनकी आय, भौगोलिक दशा एवं सामाजिक जीवन से प्रभावित होता है। मध्यप्रदेश के रीवा में अनेक जाति एवं धर्म के लोग निवास करते हैं उनकी धार्मिक मान्यताएं भिन्न–भिन्न होती है तथा उनकी जातिगत व्यवहार, परम्परागत रूप से प्रभावित परिलक्षित होता है। रीवा में निवासरत बीड़ी श्रमिक, जो प्रायः महिलायें होती हैं का संबंध विभिन्न जाति एवं धर्म से है, हिन्दू जातीय निम्न आय वर्ग की महिलायें तथा मुस्लिम समाज कि ज्यादातर बीड़ी श्रमिक महिलायें परम्परागत रूप से इसे व्यापार के रूप में शमिल है।

शोध–प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में सांख्यिकीय शोध विधियों का प्रयोग किया गया है, जिसमें समंक संकलन, वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है। समंक संकलन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों समंकों का प्रयोग किया गया है। व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं अवलोकन को प्राथमिकता दी गई है, द्वितीयक समंकों का संकलन भिन्न–भिन्न शोध पत्रों, विभागों, प्रतिवेदनों आदि से संकलित किया गया है।

साहित्यावलोकन

विभिन्न विद्वानों ने बीड़ी उद्योग पर शोध कार्य किये हैं–

निशा जैन, ''बीड़ी मजदूर जीवन स्तर एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सागर जिले के बीड़ी मजदूरों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'', डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), वर्ष 1987 ।

ज्योति तिवारी, ''सागर क्षेत्र में बीड़ी बनाने के उद्योग का आयाम : एक भौगोलिक अध्ययन'' डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), वर्ष 1993 ।

सिद्धार्थ सरकार ''पश्चिम बंगाल के कूच बिहार जिले में अनौपचारिक क्षेत्र में महिला घरेलू और बीड़ी कार्यकर्ता के मामले का अध्ययन'' उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय।

इन शोधार्थियों ने देश के अलग–अलग विश्वविद्यालयों से अलग–अलग क्षेत्रों के बीड़ी श्रमिकों पर शोध किये हैं, किन्तु म.प्र. के रीवा जिला जो अपनी सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से अलग है, यहां के बीड़ी श्रमिकों की पारिवारिक समस्याएं अन्य क्षेत्रों की समस्याओं से अलग है। अतः रीवा जिले की महिला बीड़ी श्रमिकों की पारिवारिक समस्याओं पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई।

परिकल्पना

1. रीवा में महिला बीड़ी श्रमिकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि निम्न स्तर की है।
2. रीवा में महिला बीड़ी श्रमिकों का जीवन स्तर निम्न स्तर का है।
3. महिला बीड़ी श्रमिकों की पारिवारिक आय केवल बीड़ी बनाने के बदले मिले पारिश्रमिक से पूरी होती है।
4. महिला बीड़ी श्रमिकों का पारिवारिक परिवर्तन बहुत धीमा है।
5. महिला बीड़ी श्रमिकों का जीवन बीड़ी बनाने से प्राप्त आय पर निर्भर करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. रीवा जिले में स्थित बीड़ी श्रमिकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. महिला बीड़ी श्रमिकों के जीवन स्तर को परखना।
3. महिला बीड़ी श्रमिकों के पारिवारिक जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
4. महिला बीड़ी श्रमिकों की पारिवारिक जीवन स्तर को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना।
5. नकारात्मक प्रभावों को दूर करने के उपाय सुझाना।
6. महिला बीड़ी श्रमिकों के पारिवारिक जीवन स्तर को सुधारने के लिये उपाय सुझाना।

विषय–विश्लेषण

महिला बीड़ी श्रमिक किसी विशेष धर्म से संबंधित नहीं है, बल्कि समाज के हिन्दू, मुसलमान, जैन आदि धर्म से तालुक रखने वाली महिलाएं भी शामिल हैं।

सारणी क्रमांक–1

धर्म के आधार पर महिला बीड़ी श्रमिकों का वर्गीकरण

क्र.	धर्म	संख्या	प्रतिशत
1.	हिन्दू	319	88.61%
2.	मुस्लिम	41	11.39%
3.	जैन	.	
4.	अन्य	.	
योग		**360**	**100%**

स्त्रोत – प्रत्यक्ष साक्षात्कार

सारणी क्रमांक–1 में हमने निदर्शित महिला बीड़ी श्रमिकों को उनके धर्म के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। जिसमें हिन्दू जनजाति में सर्वाधिक 88.61% महिला बीडी श्रमिक हैं, 11.39% मुस्लिम महिलाएं है किन्तु जैन महिलाएं शून्य है।

सारणी क्रमांक–2

जाति के आधार पर महिला बीड़ी श्रमिकों का वर्गीकरण

क्र.	जाति	संख्या	प्रतिशत
1.	सवर्ण	9	2.50%
2.	पिछड़ा वर्ग	81	22.50%
3.	अनुसूचित जाति	227	63.05%
4.	अनुसूचित जनजाति	2	0.56%
5.	मुस्लिम	41	11.39%
योग		**360**	**100**

स्त्रोत – प्रत्यक्ष साक्षात्कार

सारणी क्रमांक–2 में हमने निदर्शित महिला बीड़ी श्रमिकों को उनके जाति के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। अनुसूचित जाति 63.05%, पिछड़ा वर्ग 22.50%, मुस्लिम 11.39% व सवर्ण सबसे कम 2.50% महिला बीड़ी श्रमिक है।

सारणी क्रमांक–3 आयु के आधार पर निदर्श का वर्गीकरण

क्र.	जाति	20 से कम	20–29	30–39	40–49	50–59	60 से अधिक	योग
1.	सवर्ण	-	01 (0.28)	04 (1.11)	01 (0.28)	02 (0.56)	01 (0.28)	09 (0.50)
2.	अन्य पिछड़ा वर्ग	03 (0.83)	33 (9.16)	18 (5.00)	16 (4.44)	06 (1.67)	05 (1.39)	81 (22.50)
3.	अनुसूचित जाति	08 (2.222)	77 (21.38)	56 (15.55)	43 (11.94)	28 (7.78)	15 (4.17)	227 (63.05)
4.	अनुसूचित जनजाति	-	01 (0.28)	-	01 (0.27)	-	-	02 (0.56)
5.	मुस्लिम	03 (0.83)	15 (4.17)	10 (2.78)	08 (2.22)	05 (1.39)	-	41 (11.39)
	योग	**14** (3.88)	**127** (35.25)	**88** (24.44)	**64** (19.16)	**41** (11.39)	**21** (5.84)	**360** (100)

नोट– कोष्ठक में लिखी संख्याएं प्रतिशत में है। स्त्रोत – प्रत्यक्ष साक्षात्कार

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति की 20–29 आयु वर्ग, पिछड़ा वर्ग की 20–29 आयु वर्ग एवं मुस्लिम की 20–29 आयु वर्ग की सर्वाधिक महिला बीड़ी उद्योग से जुड़ी है।

सारणी क्रमांक–4

बीड़ी बनाने से प्राप्त औसत मासिक आय के आधार पर निदर्श का वर्गीकरण

क्र.	जाति	250 रू.	251–500 रू.	501–750 रू.	751–1000 रू.	1000 से अधिक	योग
1.	सवर्ण	02 (0.56)	07 (1.94)	-	-	-	09 (2.50)
2.	पिछड़ा वर्ग	15 (4.16)	45 (12.50)	19 (5.27)	02 (0.56)	-	81 (22.50)
3.	अनुसूचित जाति	63 (17.50)	140 (38.88)	19 (5.27)	05 (1.39)	-	227 (63.05)
4.	अनुसूचित जनजाति	02 (0.56)	-	-	-	-	02 (0.56)
5.	मुस्लिम	06 (1.66)	35 (9.72)	-	-	-	41 (11.39)
	योग	**88 (24.44)**	**227 (63.05)**	**38 (10.55)**	**07 (1.94**	**-**	**360 (100)**

नोट– कोष्ठक में लिखी संखएं प्रतिशत में है।

स्त्रोत – प्रत्यक्ष साक्षात्कार

सारणी क्र.4 में 24 से 360 निदर्शित महिला बीड़ी श्रमिकों को बीड़ी बनाने से प्राप्त औसत मासिक आय के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। अनुसूचित जाति की औसत मासिक आय सर्वाधिक है। दूसरे स्थान पर पिछड़े वर्ग की औरतें तथा मुस्लिम व सवर्ण की औरते है।

समस्याएं

1. महिला बीड़ी श्रमिकों की आय अर्जन के लिये कठोर परिश्रम करना पड़ता है।
2. बीड़ी महिला श्रमिकों के जीवन सुधारने का कोई मौका नहीं मिलता है।
3. महिला बीड़ी श्रमिक के स्वास्थ्य का स्तर निम्न पाया गया जाता है।
4. महिला बीड़ी श्रमिक बीड़ी बनाने के अलावा अन्य कार्य करने में असमर्थ होती है।
5. महिला बीड़ी श्रमिक का कोई श्रम संघ नहीं होता है।
6. महिला बीड़ी श्रमिक को दी जाने वाली सुविधाऐं अपर्याप्त होती है।
7. महिला बीड़ी श्रमिक के बच्चों का शिक्षा का स्तर निम्न होता है।

सुझाव

1. बीड़ी महिला श्रमिकों के कार्य के घंटे निश्चित होने चाहिए जिसे की वह अपने जीवन में उन्नति के अन्य कार्य कर सकें।
2. महिला बीड़ी श्रमिकों का नियमित तौर पर स्वास्थ्य परीक्षण होना चाहिये।
3. महिला महिला बीड़ी श्रमिकों को मुक्त व्यवसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध करवाना चाहिये।
4. महिला बीड़ी श्रमिकों के लिये सरकार को विशेष श्रम कानून बनाने चाहिये।
5. महिला बीड़ी श्रमिकों के बच्चों के लिये सरकार को मुफ्त शिक्षा देने का प्रावधान करना चाहिये।
6. सामूहिक आय सृजन गतिविधियों के लिये महिला बीड़ी श्रमिकों के स्वयं सहायता समूहों के गठन में मदद करना चाहिए।
7. महिला बीड़ी श्रमिक संगठनों और सरकार के बीच सामाजिक संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष

शोधकार्य के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला बीड़ी श्रमिकों की जाति एवं धर्म एक नहीं होता बल्कि पूंजी विहीन महिलायें इस व्यवसाय का चयन करती है। उनकी आर्थिक दशा तथा जीवन स्तर निम्न पाया जाता है। शारीरिक अस्वस्थता, अस्वस्थ वातावरण, बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य का निम्न स्तर, गंदे आवास आदि परेशानियां पाई जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एक रिपोर्ट : महिला बीड़ी श्रमिक, महिलाओं के लिए राष्ट्रीय आयोग, 2005*
2. *Rural Industrialization in backward areas, Author S. Giriappa, Publication year 1994*
3. *Women workers in Beedi Industry, Author Ramakrishnappa Venkatashami and Priya Harish, Publication year 2015, Publishers Laxmi Publication, Solapur (Maharashtra)*
4. *Employment and Economic study of House hold Beedi workers in Andhra Pradesh – A Study of living and working conditions, Author – Dr. Mure Sateeshnadha Reddy, Publisher – Independently Published Year – 2019*
5. *"Occupational Health Hazards of Beedi Rolling Women and Children" Author – Dr. Solomon* Raj, Publisher – Creative Crows Publishers.
6. *M.S.Makandar - " Bidi Workers in Nipani - A Sociological Study" , Shivaji University, Maharashtra , 1982*